Indian J. Soc. & Pol. 11 (02):83-86:2024 **ISSN: 2348-0084 (PRINT)**
February-June 2023 (31 July 2024) **ISSN: 2455-2127(ONLINE)**

कृषि व्यापारीकरण का सामाजिक, आर्थिक, एवम् सांस्कृतिक दशाओं पर प्रभाव (मऊ जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

नीरज कुमार सिंह[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, डी0सी0एस0के0पी0जी0कालेज मऊ, उ0प्र0 ,भारत

ABSTRACT

व्यापारीकरण मानव की वह आवश्यक प्रक्रिया है जो किसी भी स्थान एवं समाज में समय के साथ–साथ अनेक रूपों में क्रियाशील रहती है । व्यापारीकरण मानव के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक क्रियायों को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है. व्यापार की प्रक्रिया के द्वारा मानव पूंजी प्राप्त करके अपने जीवन को खुशहाल बनाता है। वर्तमान भौतिकवादी युग में पूंजी के द्वारा ही मानव अपना एवं अपने समाज का विकास कर सकता है। किसान अपने उत्पादन में से कुछ भाग बेचकर अपना जीवन निर्वाह करता है। मानव अपने जीवन के प्रत्येक चरण में नए जीवन दर्शनों, आदर्श सामाजिक मूल्य, नवीन कार्यशैली के द्वारा नव परिवर्तन तथा परिवर्धन करता रहता है। वर्तमान समय में विज्ञान एवं तकनीक, उद्योग, शिक्षा इत्यादि के क्षेत्र में बहुत तीव्र गति से परिवर्तन हुआ है और यह तथ्य आदिम समाज एवं वर्तमान सामाजिक परिवेश में अंतर स्पष्ट कर देता है। यह विभिन्नता किसी क्षेत्र विशेष से संबंधित नहीं है अपितु यह विषमताएं व्यक्ति तथा राष्ट्र स्तर पर भी दिखाई देती है। इन परिवर्तनों के फल स्वरुप मानव के जीवन शैली में अनेकानेक विकास हुए है। वर्तमान समय में किसी भी समाज में रहने वाले मानव के सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास के पीछे आर्थिक प्रभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। प्रस्तुत शोध पत्र में व्यापारीकरण का सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्वरूपों पर क्या प्रभाव पड़ता है इसी को जानने एवं समझने का प्रयास किया गया है।

KEYWORDS: *कृषि, कृषि व्यापारीकरण, सामाजिक व्यवस्था*

सामाजिक संरचना एवं परिवर्तन की संकल्पना

किसी भी समाज में परिवर्तन एक अमूर्त तत्व के रूप में सतत क्रियाशील प्रक्रिया है। सामाजिक संरचना की प्रक्रिया सांस्कृतिक परिवर्तन से भिन्न एवं जटिल होती है क्योंकि समाज में ऐसी व्यवस्था है जिसकी वजह से उसमें परिवर्तन के साथ–साथ जटिलता भी अधिक विद्यमान रहती है जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन मानव समुदाय के आपसी संबंधों, विश्वासों, परंपराओं, रीति रिवाज तथा आदर्श में होने के कारण स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देते है. (मैकाइवर एवं पेज) सामाजिक परिवर्तन वह शब्द है जो सामाजिक संगठन के किसी भी तत्व में फेर बदल या संशोधन को व्यक्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है. गेलिन द्वारा सामाजिक परिवर्तन को सांस्कृतिक आधार पर माना गया है मनुष्य अपने जीवन निर्वाह के लिए जो विधि तंत्र या रीति अपनाता है इसमें आए परिवर्तन ही सामाजिक परिवर्तन है. (मैरिज्म एवं एलझीम) (अगस्त कामटे), ने सामाजिक परिवर्तन को मानव के बौद्धिक विकास का परिणाम बताया है। जब उत्पादन या आर्थिक शक्तियों में परिवर्तन होता है तभी सामाजिक विकास एवं सामाजिक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ते है (कार्ल मार्क्स) विभिन्न विद्वान सामाजिक परिवर्तनों के कारकों पर भले ही एक मत ना हो किंतु सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न पक्षों पर सभी विद्वानों का एक मत है। मानव संबंधों, मूल्य तथा संगठन में आए हुए परिवर्तन को ही सामाजिक परिवर्तन कहते है। मानव के रीति रिवाज, रहने के ढंग, इतिहास में जब परिवर्तन आता है तब सामाजिक परिवर्तन होता है।

परंपरागत सामाजिक व्यवस्था

जाति प्रथा

अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में जाति व्यवस्था समाज का एक अभिन्न अंग है जातिगत विशेषताएं केवल हिंदू समाज में ही नहीं पाई जाती है बल्कि मुस्लिम, सिख, इसाई आदि समुदाय में भी यह प्रथा विद्यमान है. सर हरबर्ट रिसले का कहना है की जाति परिवारों या परिवारों के समूह का एक संकलन है जिसका एक सामान्य नाम होता है जो एक काल्पनिक पूर्वज या देवता से एक सामान्य वंश परंपरा की उत्पत्ति का दावा करते है एक ही परंपरागत व्यवसाय पर बल देते है तथा एक जातीय समुदाय के रूप में उनके द्वारा मान्य होते है और जो अपना ऐसा मत व्यक्त करने के लिए योग्य होते है। हिंदू समाज के अंतर्गत पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में जाति का निर्धारण वर्णों के आधार पर किया गया है और इन्हीं वर्णों के आधार पर सामाजिक, आर्थिक एवं आध्यात्मिक कार्यों का संपादन किया जाता है। समाज के लोग अपने–अपने कार्यों का संपादन करते हुए इसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष की प्राप्ति का ध्यान रखेंगे. हिंदू धर्म के अनुसार मानव जैसा कर्म करता है उसी के अनुरूप उसका पुनर्जन्म होता है भारतीय शास्त्रों में वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत समाज को चार वर्णों यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र में विभाजित किया गया है साथ ही साथ उनके कार्यों को भी बताया गया है। वर्तमान सामाजिक परिवेश में जाति का निर्धारण कार्यों से न होकर बल्कि जन्म से होता है. अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ का समाज उच्च वर्ग, पिछड़ा वर्ग तथा अनुसूचित जातियों के अंतर्गत विभाजित है। वर्तमान समय में अध्ययन क्षेत्र में

1: Corresponding Author

क्षत्रिय, ब्राह्मण, कायस्थ, बैश्य, कोईरी, अहीर, हरिजन, पासी, पाल, कुम्हार, केवट, नाई, भर, नोनिया, मुशहर, भंगी, लोहार, कोहार, बढई इत्यादि जातियां पाई जाती है।

धार्मिक संरचना

अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का सूक्ष्मतम अवलोकन करने से यह तथ्य स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र धार्मिक संरचना की दृष्टि से हिंदू बाहुल्य था जो आज भी स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है। प्राचीन काल में यहां एक छत्र हिंदू साम्राज्य था किंतु मुसलमानों के आगमन के पश्चात यहां पर उनकी संस्कृति का विस्तार हुआ तथा इस्लाम धर्म का प्रचार प्रसार भी हुआ। मुसलमानो के आगमन के पश्चात भारत में ब्रिटिश शासन के अभ्युदय के परिणाम स्वरुप भारत के विभिन्न क्षेत्रों में चर्च का विस्तार हुआ अध्ययन क्षेत्र मऊ भी इस प्रक्रिया से अछूता नहीं रहा और यहां पर भी धीरे–धीरे ईसाई धर्म मानने वालों की संख्या में वृद्धि होने लगी। व्यापार एवं उद्योग की दृष्टि से अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में सिखों का भी आगमन हुआ।

पारिवारिक संरचना

परिवार समाज का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है जिसके परे किसी भी व्यक्ति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। सामाजिक दृ ष्टि से देखा जाए तो व्यक्ति के विकास में परिवार का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान होता है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में संयुक्त तथा एकाकी दोनों ही प्रकार के परिवार पाए जाते है। अध्ययन क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करते है जिसके परिणाम स्वरुप अधिकांश आबादी संयुक्त परिवार के रूप में निवास करती है जबकि नगरों में निवास करने वाले अधिकांश परिवार एकाकी होते है। एकाकी परिवार नगरीकरण की आधुनिक प्रवृत्ति है। जनपद मऊ के नगरीय क्षेत्रों में यह आधुनिक प्रवृत्ति स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है।

ग्रामीण क्षेत्रों में पाए जाने वाले संयुक्त परिवार में एक मुखिया होता है जिसकी सत्ता परंपरागत रूप से निरंकुश प्रवृत्ति की रही है किंतु व्यवहार में परिवार का मुखिया अपनी सत्ता का उपयोग संपूर्ण परिवार के हित में करने का प्रयत्न करता है। देखा जाए तो मुखिया एक प्रकार का प्रबंधक अथवा न्यासी (ट्रस्टी) की तरह होता है जिसका सबसे प्रमुख कार्य ऐसे सभी कार्यों के लिए सुविधाएं जुटाना है जिनका संबंध विवाह, व्यवसाय, पढ़ाई, नातेदारी, संबंधी तथा अनुष्ठानों की पूर्ति से होता है। मतदान के समय किसी विशेष प्रत्याशी के पक्ष में मत देने संबंधी निर्णय का अधिकार भी मुखिया के पास होता है तथा परिवार के सदस्य है उसी निर्णय के अनुरूप मतदान भी करते ह ै अतः यह कहा जा सकता है कि मुखिया परिवार का शासक, गुरु, शिक्षक और व्यवस्थापक है। भारतीय समाज में परिवार के मुखिया की आलोचना अथवा तिरस्कार करना न सिर्फ परिवार की प्रतिष्ठा के विरुद्ध होता है अपितु इसे एक प्रकार का अनैतिक तथा और अधार्मिक कार्य भी माना जाता है।

हिंदू सामाजिक संरचना के अंतर्गत विद्यमान संयुक्त परिवार व्यवस्थाएं एक अद्वितीय व्यवस्था है जो वैदिक काल से लेकर, आज तक एक महत्वपूर्ण परंपरागत सामाजिक व्यवस्था के रूप में चली आ रही है। भारतीय धर्म, दर्शन, वर्ण और आश्रम तथा इसी प्रकार के अन्य कितने ही तत्व हमारे सामाजिक इतिहास के महत्वपूर्ण प्रयोग कहे जा सकते है परंतु सबसे सुलभ सूखकारी तथा महत्वपूर्ण संस्था भारतीय परिवार है। भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुंबकम की जो धारणा है संयुक्त परिवार व्यवस्था उसी के प्रतीक के रूप में देखा जा सकता है। परिवार पति–पत्नी तथा बच्चों से भी बन जाते है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में पारिवारिक सर्वेक्षणों से प्राप्त समंकों का विश्लेषण करने के उपरांत यह निष्कर्ष निकलता है कि अध्ययन क्षेत्र में दिन प्रतिदिन संयुक्त परिवारों की संख्या कम होती जा रही है इस परिवारिक विखंडन का दर्शन सामान्य एवं पिछड़ी जातियों में होता है। अनुसूचित जाति एवं जनजाति में प्राचीन समय से ही विवाह के उपरांत पुत्र पिता से अलग हो जाता है जिससे परिवार संयुक्त ना होकर एकाकी परिवार के रूप में बदल जाता है किंतु अब इस प्रकार की प्रवृत्ति समाज के अन्य जातियों में भी देखने को मिल रही है जिसके परिणाम स्वरूप समाज में एकाकी परिवारों का प्रचलन तेजी से बढ़ रहा है जो सामाजिक दृष्टि से चिंता का विषय है।

परंपरागत ग्रामीण संरचना

अध्ययन क्षेत्रकी परंपरागत ग्रामीण संरचना अत्यंत जटिल है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि तथा उससे संबंधित अनेक ऐसे कार्य होते है जो संयुक्त रूप से या आपसी सहयोग द्वारा ही किये जा सकते है बिना सहयोग के यह कार्य संभव नहीं है। समाज में एक साथ किए जाने वाले कार्य अंतर्जातीय संबंधों की एक रूपरेखा है परंपरागत ग्रामीण समाज में शक्ति संरचना के प्रमुख तीन आधार थे. 1.जमींदारी प्रथा 2.ग्राम पंचायत 3.जाति पंचायत.

यह तीनों आधार आज से सैकड़ो वर्ष पूर्व प्रचलन में थे जमीदारी प्रथा समुदाय के लोगों की भौतिक व आर्थिक हितों तथा आकांक्षाओं की प्रतिनिधि थी तो वहीं दूसरी तरफ ग्राम पंचायत तथा जाति पंचायतें ग्रामीण राजनीति की सामाजिक विषमताओं का प्रतीक थी। ग्रामीणों का मुख्य व्यवसाय कृषि था स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चातकानून बनाकर जमीदारी प्रथा को समाप्त कर दिया गया जबकि वर्तमान समय में सामाजिक चेतना के परिणाम स्वरुप जाति पंचायत का अस्तित्व समाप्त हो रहा है। वर्तमान समय में ग्रामीण क्षेत्रों में केवल ग्राम पंचायतें क्रियाशील है ग्राम पंचायत के द्वारा ग्रामीण अंचलों का सामूहिक रूप से विकास कार्य किया जाता है। वर्तमान समय में सरकारों द्वारा ग्राम पंचायत के विकास पर सर्वाधिक ध्यान दिया जा रहा है क्योंकि भारत की दो तिहाई से अधिक जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है पारंपरिक ग्रामीण समाज में पुश्तैनी पेशे भी होते है इस पेशे के आधार पर उसे जाति विशेष को संबोधित किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्र के अर्थव्यवस्था कृषि आधारित होती है किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि भूमि का समान वितरण नहीं पाया जाता है जिसके कारण कृषक के साथ–साथ कार्य करने वाला श्रमिक वर्ग भी पाया जाता है।

ग्रामीण समाज में पाए जाने वाले हिंदू समुदाय की सबसे प्रमुख विशेषता उसमें जातियों का पाया जाना है जिसका तात्पर्य है एक जाति विशेष द्वारा किए गए आचरण से है इस प्रकार के संबंधों की स्थापना समाज में नातेदारी या रिश्तेदारी विवाह तथा रक्त संबंधों

से होता है। विवाह तथा रिश्तेदारी से जहां एक तरफ विस्तृत क्षेत्र में स्त्री पुरुष के यौन संबंधों तथा सामाजिक संगठनों को स्थिरता व दृढ़ता मिलती है वहीं दूसरी तरफ परिवार को स्थापित करने तथा सजातीयता को मजबूत बनाने हेतु आधार भी प्राप्त होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में छुआछूत की भावना अभी भी दिखाई पड़ती है जो समाज में एक अभिशाप के रूप में विद्यमान है। अध्ययन क्षेत्र में विस्तृत भ्रमण एवं सर्वेक्षण से यह तथ्य पाता चलता है कि गांव में उच्च जाति के लोगों के यहां होने वाले अनुष्ठान या कर्मकांड में निम्न जाति के लोग शामिल नहीं होते है अर्थात विभिन्न वर्गों के बीच भेद स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में जजमानी व्यवस्था अब लगभग समाप्त प्राय हो चुकी है फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में पाए जाने वाली सेवक जातियां अपने वंशानुगत सेवाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंचा रहे है जैसे (बाल काटने वाला) नाई, (मिट्टी के बर्तन बनाने वाला) कुम्हार, (कपड़ा धोने वाला) धोबी, (काष्ठ संबंधी वस्तुएं बनाने वाला) बढई, पानी भरने वाला (कहार), (लोहे के औजार बनाने वाला) लोहार, (पान लगाने वाला) बारी,आदि अपने पुश्तैनी धंधों से वर्तमान समय में भी जुड़े हुए है. अध्ययन क्षेत्र में पूजा पाठ करने का कार्य ब्राह्मण द्वारा ही किया जाता है।

अनुसूचित जातियों की स्थिति

किसी भी क्षेत्र विशेष की सामाजिक, आर्थिक संरचना के अध्ययन में वहां पाई जाने वाली अनुसूचित जातियों का स्थानिक विवरण एवं उसकी शैक्षिक स्थिति का विशेष योगदान होता है। सामान्यतः यह देखा जाता है कि जिन क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों की जनसंख्या अधिक होती है वे क्षेत्र विकास की दृष्टि से पिछड़े होते है क्योंकि अनुसूचित जातियां सामाजिक दृष्टिकोण से पीड़ित एवं अल्प भू क्षेत्र के स्वामी होते है अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ के अनुसूचित जातियों की स्थिति भी कमोबेश इसी प्रकार की पाई जाती है। सन 2011 की जनगणना के अनुसार अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में अनुसूचित जातियों की संख्या 26.01ः पाई जाती है।

तालिका संख्या : 1

जनपद मऊ में अनुसूचित जातियों का वितरण (2011)

क्रमांक	विकास खण्ड	सम्पूर्ण जनसंक्ष्या में अनुसूचित जातियों का प्रतिशत
1	दोहरीघाट	28.1
2	फतेहपुर मण्डाव	23.3
3	घोसी	23.1
4	बड़रांव	21.4
5	कोपागंज	23.3
6	परदहां	30.2
7	रतनपुरा	22.0
8	मुहम्मदाबाद गोहना	31.8
9	रानीपुर	31.6
	योग	26.1

स्रोतः जिला सांख्यिकीय पत्रिका, जनपद मऊ

तालिका 1 में मऊ जनपद के अनुसूचित जातियों का वितरण विकास खंडवार दिया गया है। तालिका के अवलोकन से स्पष्ट हो रहा है कि जनपद के मोहम्मदाबाद गोहना विकासखंड में अनुसूचित जाति के लोगों की प्रतिशत संख्या अधिक पाई जाती है। जनपद मऊ की एकमात्र विधानसभा आरक्षित अनुसूचित जाति सीट मोहम्मदाबाद गोहना ही है वहीं अध्ययन क्षेत्र के बड़रांव विकासखंड में अनुसूचित जातियों की सबसे कम प्रतिशत जनसंख्या पाई जाती है।

व्यापारीकरण का सामाजिक व्यवस्था पर प्रभाव

सामाजिक व्यवस्था पर व्यापारीकरण का काफी प्रभाव देखने को मिलता है वर्तमान भौतिकवादी युग में हमारी सामाजिक व्यवस्था आर्थिक विकास में ही निहित है। व्यापारीकरण की प्रक्रिया द्वारा किसान अपने उत्पाद को बाजार में बेचकर अपना स्वयं अपने परिवार का विकास करते हुए आर्थिक जीवन सुदृढ़ बनता है। अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ की लगभग दो तिहाई आबादी कृषि पर निर्भर है। अध्ययन क्षेत्र के किसानों द्वारा केवल जीवन निर्वाहक कृषि ही की जाती है क्योंकि यहां पर जोत का आकार छोटा होने के साथ–साथ जनाधिक्य के बाद अन्य साधनों का अभाव पाया जाता है अध्ययन क्षेत्र के कृषकों के पास पूंजी के अभाव के कारण वह उन्नत किस्म के बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों का प्रयोग या तो नहीं कर पाता है या फिर अल्प मात्रा में कर पाता है जो उत्पादन भी होता है उसका उचित मूल्य अधिकांश किसानों को नहीं मिल पाता है। सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत जाति व्यवस्था, जजमानी व्यवस्था ,जातियों की व्यावसायिक संरचना, पारिवारिक संरचना इत्यादि से संबंधित व्यवस्था को शामिल किया जाता है। प्राचीन समय में व्यापार सिर्फ बनियों द्वारा ही किया जाता था किंतु वर्तमान समय में समाज के हर वर्ग के लोग इसमें लगे हुए है। व्यापार से पूंजी की प्राप्ति होती है अध्ययन क्षेत्र में व्यापारियों द्वारा किसानों से सस्ती दर पर अनाजों की खरीद की जाती है और उसे मंडियों में बेचकर मोटा मुनाफा कमाया जाता है जबकि किसानों को मेहनत के हिसाब से अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता है जिससे उनकी सामाजिक व्यवस्था में कोई आमूल चूल परिवर्तन नहीं हो पाता है।

व्यापारीकरण एवं सांस्कृतिक स्वरूप

व्यापारीकरण एवं सांस्कृतिक स्वरूप से हमारा तात्पर्य जीवन शैली तथा विचारों में आने वाले व्यापक परिवर्तन से है जिसके अंतर्गत सामाजिक एवं मानव मस्तिष्क द्वारा रचित जीवन तंत्र की समस्त क्षेत्रीय अभिव्यक्तियां भी शामिल होते है। संस्कृति एवं समाज मानव द्वारा ही विकसित जीवन यापन की वैचारिक एवं आचरणत्मक विधि है जो अतीत से लेकर वर्तमान तक के सतत चिंतन, अनुभूतियों, देशकालिक आवश्यकताओं व सांस्कृतिक स्वरूप का प्रतिफल है सांस्कृतिक आयाम मानव जीवन के दर्शन, मूल्य, मान्यता, शैलियों तथा तकनीकी, वैचारिक उपलब्धियों के प्रतीक होते है वही समाज उसके सामूहिक जीवन के संगठनात्मक संक्रियात्मक और रीति–रिवाज जैसे तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है सांस्कृतिक स्वरूप वह जटिल समग्रता है जिसके अंतर्गत ज्ञान, विश्वास, कला, कानून प्रथा, सामाजिकता दृआर्थिक, राजनीतिक व्यापारिक इत्यादि आदतों का समावेश रहता है जिन्हें मनुष्य समाज का सदस्य होने की वजह से

प्राप्त करता है। संस्कृति के अंतर्गत उन सभी वस्तुओं को शामिल माना गया है जिसका स्थानांतरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में निरंतर चलता रहता है। इस प्रकार देखा जाए तो संस्कृति गतिशील है जिसका प्रभाव व्यापारीकरण पर भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। संस्कृति परिवर्तनशील है अतः जैसे–जैसे हमारी संस्कृतियों बढालती जाएंगे उसी प्रकार से व्यापारीकरण का सांस्कृतिक स्वरूप भी बदलता जाएगा।

आर्थिक स्वरूप में परिवर्तन

अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में विगत दो दशकों से ग्रामीण क्षेत्रों में जहां कृषि की सघनता में वृद्धि हुई है वहीं इसके साथ–साथ किसानों में अपनी आय में वृद्धि हेतु नव चेतना जागृत हुई है। अध्ययन क्षेत्र के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि है किसानों को विभिन्न प्रकार के साधान उपलब्ध होने से परिवार के कुछ सदस्य कृषि में तथा कुछ अतिरिक्त साधनों से आए प्राप्त कर रहे है जिसकी वजह से अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ के आर्थिक स्वरूप में तेजी से परिवर्तन दिखाई पड़ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योगों के विकास हेतु सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं संचालित की जा रही है जिसके अंतर्गत मुर्गी पालन, सूअर पालन, मत्स्य पालन, दुग्ध उद्योग इत्यादि के विकास हेतु सरकार द्वारा सहयोग दिया जा रहा है सरकार के इस प्रयास से जनपद वासियों के आर्थिक स्वरूप में परिवर्तन भी परिलक्षित हो रहा है। अध्ययन क्षेत्र में बुनाई उद्योग कुटीर उद्योग के रूप में सर्वाधिक प्रचलित है जिसके लिए घर–घर में लूम (पॉवर हाथ) लगे हुए है। बुनाई उद्योग का विस्तार नगरीय क्षेत्र से लेकर ग्रामीण क्षेत्र तक सभी जगह पाया जाता है विशेष कर जहां अल्पसंख्यक आबादी का संकेंद्रण पाया जाता है। अध्ययन क्षेत्र के लगभग प्रत्येक ग्रामीण में आर्थिक स्तर उच्च करने की तालसा बढ़ी है किंतु अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीणों में शिक्षा तथा जागरूकता के अभाव के कारण वह सरकार द्वारा संचालित योजनाओं का लाभ पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं कर पाता है क्षेत्र में सक्रिय दलालों या बिचौलियों के द्वारा ग्रामीणों के कार्य में सहयोग का आश्वासन देकर पैसे का एक बड़ा हिस्सा कमीशन के रूप में लेकर ग्रामीणों का आर्थिक शोषण किया जाता है। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के प्रचार प्रसार की जरूरत है तथा अध्ययन क्षेत्र के ग्रामीणों के लिए जागरूकता कार्यक्रम संचालित करने की आवश्यकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाले उत्पादों के रखरखाव एवं परिवहन के समुचित व्यवस्था न होने के कारण ग्रामीणों के समस्त प्रयास व्यर्थ हो जाते है क्योंकि उन्हें अपने उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त नहीं हो पाता है।

ग्रामीण जीवन स्तर में सुधार एवं परिवर्तन

अध्ययन क्षेत्र जनपद मऊ में बदलते हुए परिवेश के परिणाम स्वरुप यहां के लोगों के जीवन स्तर में व्यापक परिवर्तन हुआ है अध्ययन क्षेत्र के किसानों द्वारा कृषि में यंत्रीकरण को बढ़ावा देने के साथ–साथ वैज्ञानिक पद्धति से कृषि क्रियाकलाप करने का प्रयास किया जा रहा है। कृषि के साथ–साथ कुटीर उद्योगों की तरफ भी लोगों का ध्यान आकृष्ट हुआ है जिन परिवारों में कृषि योग्य भूमि का अभाव पाया जाता है उन परिवारों के सदस्य विशेष रूप से कुटीर उद्योगों में संलग्न पाए जाते है जिससे परिवार में अधिक से अधिक धान की प्राप्ति होती है तथा लोगों की जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है रहन–सहन का स्तर भी ऊंचा हो रहा है।

विगत दो दशकों में लोगों के आय में वृद्धि के परिणाम स्वरुप लोगों के भोजन में सम्मिलित पदार्थों के स्वरूप में भी काफी परिवर्तन आया है लोगों द्वारा भोजन में पौष्टिक पदार्थों को शामिल किया जा रहा है। छोटे–छोटे कस्बों में लगने वाले बाजारों में भी साउथ इंडियन तथा चीनी व्यंजनों की उपलब्धता देखी जा सकती है। ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले लोगों के वेशभूषा में भी काफी परिवर्तन आया है पुरुषों के साथ–साथ महिलाओं द्वारा भी पश्चिमी परिधानों के प्रति आकर्षण को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्र के अधिवासी स्वरूप में भी काफी परिवर्तन देखा जा सकता है पहले लोगों के पास अधिकतर घास–फुश के छप्पर तथा कच्चे मकान हुआ करते थे लेकिन वर्तमान समय में अधिकांश लोगों के पास पक्के मकान है। अधिकतर लोगों के पास आवागमन की सुविधा के लिए साइकिल, मोटरसाइकिल की सुविधा देखी जा सकती है जबकि सामाजिक रूप से संपन्न लोगों के पास चार पहिया वाहन की उपलब्धता भी देखी जा सकते है इस सब का प्रमुख कारण लोगों के ग्रामीण जीवन स्तर में व्यापक परिवर्तन से है।

REFERENCES

सिंह, प्रताप शिव (2002) *कामर्शियलाइजेशन आफ एग्रीकल्चर इन जौनपुर डिस्टिक्टः प्राब्लम एण्ड देयर सल्यूशन्स, ए ज्योग्राफिकल स्टडी*

सिंह, आर बी (1956), *कल्चरल ज्योग्रफी आफ वाराणसी डिस्टिक्ट ड्यूरिंग प्री राजपूत पीरियेड*

स्टीवर्ट जे0एच0 (1971) *थियरी आफ कल्चरल चेंज, दी मेथडॉलॉजी आफ हाल्टी लीनियर इवोल्यूशन*

कुरुक्षेत्र, मासिक पत्रिका, जुलाई 2022

जिला सांख्यिकीय पत्रिका (2018) जनपद–मऊ

मौर्य, कुमार बृजेश (2011) *गाजीपुर जनपद में कृषि व्यापारीकरण की समस्याएं एवं नियोजन–एक भौगोलिक अध्ययन* शोध प्रबंध; अप्रकाशित